

जयपुर में जुटा रहे हैं 'नाविक' का डेटा

इसरो ने शहर में स्थापित किए
दो डेटा रिसीविंग स्टेशन



जयपुर ● इसरो द्वारा विकसित देश के अपने जीपीएस 'नाविक' का डेटा जयपुर में जुटाया जा रहा है। अजमेर रोड स्थित जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी में इसकी रिसर्च की जा रही है। जहां रिसर्चर लैब में स्पेस से मिलने वाले डेटा की एक्चुरेसी पर काम कर रहे हैं। इसके लिए इसरो ने लैब को दो डेटा रिसीवर दिए हैं, जिसे रिसर्चर्स की टीम रिसीव होने वाले डेटा का दूसरे देशों के जीपीएस से कम्पेरिजन और वैलिडेट कर रहे हैं। यूनिवर्सिटी में इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डायरेक्टर डॉ. अनुपम के. सिंह के अनुसार, इसरो और केन्द्र सरकार का यह महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट है। इसके लिए जनवरी से लैब डवलप कर काम शुरू किया गया है। हालांकि अभी शुरुआती डेटा मिल रहा है, लेकिन नतीजे बेहतर मिलने की उम्मीद है।

क्या होगा फायदा

जीपीएस नाविक देश का अपना ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम है। इसके जरिए न केवल लोगों को दृश्य और ध्वनि के जरिए नेविगेशन मिलेगा, बल्कि सटीक समय और सही रास्तों का पता लगाने में आसानी होगी। इसके अलावा इमरजेंसी सर्विसेज, वाहनों का पता लगाने, समुद्री नेविगेशन, मछुआरों को मछली पकड़ने में आसानी और आर्म्ड फोर्सों के लिए यह काफी महत्वपूर्ण होगा। बकौल अनुपम, 'नाविक' क्षेत्रीय स्तर पर काफी मदद करेगा, जिससे सरकार को अपनी योजनाओं के क्रियान्वन में आसानी होगी। मसलन, बांधों में पानी का आंकलन, सूखा या अन्य आपदा का सही विश्लेषण और ग्राउंड वॉटर लेवल को आईडेंटिफाई करना इससे मिलने वाले आंकड़ों से आसान होगा। इसके लिए 12 जून को सवाई माधोपुर रिसर्चर्स की एक टीम भी जाएगी और बांधों में पानी की मात्रा का आंकलन किया जाएगा।

क्या है 'नाविक' : इंडियन रीजनल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (आईआरएनएसएस) द्वारा विकसित सैटेलाइट नेविगेशन सिस्टम है। यह पूर्णतया भारत सरकार के अधीन होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसका नाम मछुआरों को समर्पित करते हुए नाविक रखा है। इसका उद्देश्य देश और देश की सीमा से 1500 किलोमीटर की दूरी तक के हिस्से में उपयोगकर्ता को सटीक स्थिति की सूचना देना है।